International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2016; Page No. 52-54

उषा प्रियवंदा के उपन्यास (शेषयात्रा, अंतवर्शी, रुकेगी नही राधिका) प्रवासी जीवन व संघर्ष के सन्दर्भ में

पूनम आर्या

डी0 एस0 बी0 परिसर नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत।

सारांश

आज औद्योगीकरण से बढ़ती हुई जटिलता नगरीकरण के बढ़ते दायरों के साथ – साथ व्यापक मानववादी भावना का फैलना प्रारम्भ हो गया है। आज के वैज्ञानिक युग में जब यातायात के साधानों और सुगमता में यूरोप क्या अमेरिका और एशिया सारा विश्व सिमटकर एक दूसरे की सीमाओं समस्याओं से प्रभावित हो रहा है। अतः वैश्वीकरण के इस दौर में बेहतर अवसरों की तलाश में युवा वर्ग का विदेशों की ओर आकर्षित होना और वहा बसकर अपने भविष्य को संवारते हुए प्रवासी जीवन बिताना स्वाभाविक ही लगता है किन्तु आज समस्त विश्व में स्थितियॉ, समस्याऐं लगभग एक जैसी ही है। क्योंकि प्रभाव तो सर्वत्र एक जैसा ही पड़ता है। वैज्ञानिक प्रगति के बढ़ते चरणों ने व्यक्ति को अधिकाधिक तार्किक और बौद्धिक बना दिया और उसी के कारण समस्त पुराने संस्कारो पर प्रश्न चिन्ह लगने शुरू हो गया है सर्वत्र एक मोहभंग और आस्थाहीन जैसी स्थितियॉ मौजूद नजर आने लगी। इन्ही सब कारणों के चलते प्रवासी जीवन संघर्ष और मोहभंग की दास्तान बन गया। उषा प्रियंवदा ने अपने उपन्यासों में अत्यन्त बारीकी से उन तमाम भारतीय परिवारों की जीवन शैली का विश्लेषण किया है। जो बेहतर अवसरों की तलाश और आशा में प्रवासी हो जाते है। और फिर शुरू होता है। उनके प्रवासी जीवन का संघर्ष।

मूलशब्द: अजनबीपन, मोहभंग, प्रवासी संघर्ष, अकेलापन, संत्रास, कुंठा, घुटन, ऊब।

प्रस्तावना

उषा प्रियंवदा हिंदी कथा साहित्य की समर्थ लेखिका है। नयी कहानी आंदोलन उत्तरार्द्ध में उषा प्रियंवदा ने कहानी लेखन में प्रवेश किया। 'कहानी' पत्रिका में जुलाई, 1958 में 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' का प्रकाशन होते ही इनमें कहानी लेखिका की उर्जा सामने आयी। इसके बाद प्रियंवदा की कहानियों धड़ल्ले से छपने लगी। उस कालखण्ड की प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं में इनकी कहानियो का प्रकाशन आरम्भ हुआ। जनवरी 1960 में 'कल्पना' में 'दृष्टिकोण' कहानी छपी, फिर 'कहानी में अगस्त 1960 में 'खुले हुए दरवाजे' का प्रकाशन हुआ और अगस्त, 1960 में ही' नयी कहानियॉ' पत्रिका में वापसी' जैसी जानदार कहानी छपते ही उषा प्रियंवदा कहानी लेखिका के रूप में चित्रित और स्थापित हो गयी। ऐसी नहीं है कि उषा प्रियंवदा का नयी कहानी आंदोलन के दौरान अचानक ही पर्दापण हो गया हो, उसकी पृष्ठभूमि पहले से ही बन रही थी। उषा जी ने स्वयं स्वीकार किया है – ''शायद सुमित्रानंदन पंत जी से प्रभावित हुई है। छात्रावस्था में बहुत शामें पंत जी के घर बीती है। अब भी हनीसकल के गुलाबी फूल मेरे घर के पिछवाड़े की सुगंधित रखते है तो अक्सर पंत जी को याद कर लेती हूँ, उन्होने ही पहले – पहल फूलों उनके रंगो और सुगंधों से परिचय कराया था अपनी बगिया में फूल चुनते मटर की ताजी फलियॉ खड़े – खड़े खोत या सेम तोड़ते हुए – 'आः धरती कितना देती है' बार – बार स्मृति में उभरती है''[1] साहित्यिक उर्जा जिस व्यक्ति में होती है, वह अपने परिवेश को स्वयं चुनकार वहां तक पहुँचता है। उषा जी ने भी साहित्यिक दिग्गजों से अपने सम्बन्ध विद्यार्थी जीवन में ही बानाये, उनसे प्रेरणा लेकर अपनी जीवन धारा को दिशा और गति देने में सफल हुई।

उषा प्रियंवदा ने विश्व साहित्य का अध्ययन भी किया है। और अध्यापन भी कर रही है। दिल्ली के लेडी श्रीराम कालेज में भी पढ़ाया और इलाहाबाद विश्विद्यालय में भी। इसके बाद उनकी अगली यात्रा विदेश में पढ़ने की हुई। फुलब्राइट स्कॉलरशिप पर पोस्ट डॉक्टरल स्टडी के लिए अमेरिका स्थित ब्लूमिंटन, इंडियाना गयी और वही वे विस्किांसिन विश्वविद्यालय मैडीसन में दिक्षणेएशियाई विभाग में प्रोफेसर के रूप में नियुक्त होकर वही रही गयी। अमेरिका मेंरहने के कारण प्रवासी भारतीयों की जिन्दगी से जुड़ने का मौका उन्हें मिला। प्रवासी जीवन पर हिंदी कथा – साहित्य में उल्लेखनीय और स्तरीय सामग्री का अभाव उषा जी के लेखन के कारण बहुत हद तक पूरा हुआ। हिंदी कथा – साहित्य में एक नये परिवेश में सम्बद्व कहानियों और उपन्यास सामने आए। इसलिए हिंदी कथा – साहित्य उनकी ऋणी है। प्रवासी जीवन पर आधारित लेखन के कारण भी उषा प्रियंवदा को हिंदी कथा –साहित्य में विशिष्ट पहचान बनाने में मदद मिली, सन् 1961 में उनका कहानी संग्रह पहले ही 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' शीर्षक से प्रकाशित हो चुका था। कहानियों के समानान्तर ही उनके उपन्यास भी प्रकाशित होने लगे। ''पचपन खम्भे लाल दीवरें'' सन्1962 में प्रकाशित हुआ और उसके बाद फिर 'रूकोगी नहीं राधिका'' 'शेषयात्रा' जैसे उपन्यास 'एक कोई दूसरा' 1966' कितना बड़ा झूठ' 1988 'मेरी प्रिय कहानियॉ 1974' 'शून्य तथा अन्य रचनाएँ' जैसी कहानी – संग्रह भी प्रकाशित हुए। उषा प्रियंवदा कथा – साहित्य में प्रखर लेखिका के रूप में समाज में लोकप्रिय और चर्चित है।

उषा प्रियंवदा ने विगत चार दशकों से हिंदी कथा साहित्य की श्री बुद्धि में योगदान दिया है। प्रवासी भारतीय जीवन के यथार्थ उनकी समस्याओं, दृष्टियों और जीवन मूल्यों में आए परिवर्तन को नए अंदाज में उषा प्रियंवदा ने रचनाओं के माध्यम से स्थापित किया है। सर्वथा अपरिचित परिवेश में जीवन बसार करते भारतीय स्त्री – पुरूषों को जितनी प्रमुखता के साथ कलात्मक अंदाज में रूपायित किया है। वह अनूठा और अद्भुत है। उषा प्रियंवदा स्वयं हिंदी देश प्रदेश छोड़कर प्रवासी हो गयी और इसके बावजूद हिंदी कथा – साहित्य में उनकी सच्ची निष्ठा विद्यमान है। भारत में विदेश मे बसे युवकों से मध्यवर्गीय परिवारों की कन्याओं का विवाह सौभाग्य समझा जाता है और फिर शुरू होता है संघर्ष और मोहभंग का अटूट सिलसिला। ऐसा ही है ''शेष यात्रा' की पात्र अनु। बी. एससी.

मे पढ़ने वाली अनू का विवाह विदेशी डॉक्टर प्रणम के साथ हो जाता है। अतः विवाहोपरान्त अनु अमेरिका में प्रवासी जीवन व्यतीत करती है। ऑखों में कई सपने संजोकर सुखी – समृद्ध जीवन की आस लिए अनु पति के साथ अमेरिका पहुॅचती है। अनु एक समर्पिता पत्नी बन जाती है और अपने पति की इच्छानुसार स्वयं को नये माहौल में ढाल लेती है किन्तु अनु कीगृहस्थी को किसी की नजर लग जाती है क्योकि प्रणव का सम्बन्ध कई स्त्रियो से था' जैसे नीरजा, विभा, चन्द्रिका, आदि वह चन्द्रिका की खातिर अनु को तलाक दे देता है। अनु की कोई फ्रिक किये बिना वह उसे छोड़कर चन्द्रिका के साथ चला जाता है। और तभी अनु का मोहभंग होता है, 'रानी बनाकर रखूंगा' कहनेवाला प्रणव उसे मंझधार में अकेली छोड़कर चला जाता है और विदेशी भूमि पर अनु का एकांकी संघर्ष प्रारम्भ हो जाता है। विदेश में उसको अपना अकेलापन खाने को दौड़ता है। '' दिनके उजाले में जो चीजें इतना त्रास नहीं देती, वहीं रात अकेले, घुप अंधेरे में कितनी बड़ी, कितनी दुर्गम लगने लगती है। अकेलेपन के उस डर का भी जैसे एक रूखा – सूखा, तालू से चिपका स्वाद है, वह स्वाद अनु को एक मिनट भी नही छोड़ता है।''[2] प्रणव से तलाक लेकर अनु बहुत उदास रहने लगती है। उसको यह आशा रहती है कि शायद प्रणव लौट आये लेकिन ऐसा नही होता है अनु अपनी सहेली दिव्या के यहां आ जाती है। दिव्या से ही उसको आत्मनिर्भर और स्वाभिमान की प्रेरणा मिलती है। और वह डॉक्टर बन जाती है। अनु को, विवाह के पहले से ही उसकी सहेली दिव्या का भाई, डॉ. दीपांकर प्यार करता आया है। लेकिन ऐसे प्यार के सम्बन्धों को हमारे समाज और परिवारों में अधिक महत्व नही दिया जाता, किन्तु अमेरिका स्थित अनु इस प्यार को स्वीकार कर लेती है और दीपांकर के साथ विवाहबंधन में बंध जाती है। इस नये वैवाहिक जीवन में मातृत्व सुख की प्राप्ति भी उसे होती है लेकिन अनडिपेंडेट और अनरिलायबल प्रणव कहीं भी टिक नहीं पाता – ''कितना कुछ जिया, झेला, देखा कितनों से जुड़ा कितने ठिकाने बनाए और कितनी बार सब कुछ एक निष्ठुरता एक अलगाव से तोड़कर आगे बढ़ गया''।[3] अनु और प्रणव,संघर्ष दोनों ही करते है किन्तु स्थैर्य अनु को प्राप्त होता है और प्रणव अन्त तक अपने किये पर पछताता हुआ भटकता रहता है। दस साल बाद जब प्रणव रोग से ग्रस्त हो जाता है तब वह अनु से मिलता है तब उसे अनु के रूप में एक आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर स्त्री के दर्शन होते है। वह अपने पूर्व पति प्रणव के साथ गर्व के साथ शराब पीती है – '' आज वह सीधी सतर सामने बैठी है बराबरी से शराब पी रही है, खुली, हल्की, आत्मगरिमा और विश्वास से भरी''[4] इस बदली हुई अनु को देखकर प्रणव का प्रतिभाव चोट खाता है। अनु कैरियर, बच्ची, पति सब कुछ प्राप्त करती है। किन्तु प्रणव अकेला रह जाता है। एकदम अकेला, बिना घर – बार, बिना बीवी बच्चों के, एकदम अकेला, यही तो जीवन है। अंतर्विरोधो की भूमि। व्यामोहों का जगत कुछ पानो और कुछ गॅवाने क कर्मस्थली। ' इतना दर्द' अकेले ही झेला?' कहकर पूर्व पति की पीड़ा को गहराई से आत्मसात् करने वाली अनु अब चाहकर भी उसके लिए कुछ नहीं कर सकती। हॉ संयोग से हाथ आए मिलन के इन दो चर क्षणों को अतींद्रिय हाथों से छू अवश्य सकती है – '' बाहर रात खिंचकर लंबी हो रही है। पलंग पर पड़ा रोग से टूटा प्रणव, पास बैठी भरी – पूरी अनु। यह क्षण अपने है, उन दोनों के जो उन्होने साथ – साथ जिए थे – प्यार, मनुहार, सुख दुःख, यातना, क्रूरता बेवफाई ..... उस जिंदगी के, जो उन्होने तार तार अपने हाथों बुनी थी। समय परिस्थितियों नए, चेहरों नई, जगहो, नए संबंधों ने उसे रगड़ – रगड़कर लगातार धोया है, फिर भी कुछ आकृतियो, कुछ रूप, कुछ रंग उस बुनावट में अभी भी बचे हुए है। '' 5 अगली सुबह दोनों अपनी – अपनी जीवन यात्रा पर पुनः निकल पड़ते है। शायद आगामी मुलाकात की कोई संभावना न छोड़ते हुए।

'अंतर्वशी' की नायिका बनारस की 'वनश्री' जो अमेरिका पहुॅचकर 'वाना' हो जाती है – एक ऐसे समाज के बीच पहुॅच जाती है जहॉ सभी लोग एक होड़ में एक पागल दौड़ में रत है। जहां हर कोई अपनी उपलब्धियों पर इतराता है। सफलता का शिखर चूमना चाहता है, वही 'वाना' अपनी लाचारियों में उलझी हुई है। विवशताओं से घिरी हुई वाना जैसे – तैसे गृहस्थी की गाड़ी खींचती है। पति की असमर्थताओं का दम घोटे एहसास उसे क्रमशः उसके प्रति संवेदनहीन बना देता है, जिसकी परिणति होती है। सम्बन्धों के ठण्डेपन में। शिवेश की गैरजिम्मेदारी के कारण उसे अपनी इच्छाओं का गला घोटना पड़ता है। भीतर – भीतर उसका मन उसे कचोटता रहता है। हर छोटे – छोटे सुख के लिए तरसती वाना स्वयं को हर स्थिति से उबरने के लिए तैयार करती है। कम पढ़ी लिखी होने के बावजूद वह हिम्मत नही हारती है। वह स्वयं को दुबारा गठने की बात सोचने लगती है। वह शिवेश से कहती है – ''मैं आगे पढ़ना चाहती हूॅ। नवे दर्जे के बाद पढ़ाई छोड़ दी अब मैं यहां से हाईस्कूल करूंगी शाम को वयस्को के लिए क्लास होते है। विदेशी विद्यार्थियों को अंग्रेजी मुफ्त सिखायी जाती है। वहां भी जाऊंगी। जब यहां रहना ही है तो यहां की तरह भाषा बोलना चाहती हूॅ। गलत – सलत अंग्रेजी में बात नही करनी''[6] शिवेश उसकी पढ़ाई का विरोध नही कर पाता। सहयोग देता है। वाना की पढ़ाई आरम्भ होती है, वह हाईस्कूल की परीक्षा पास करती है और अंग्रेजी बोलने में ऐसी दक्षता प्राप्त करती है कि श्रोता को लगता है जैसे वह अमेरिका में ही जन्मी पली है। इसी योग्यता के कारण उसे विंडसर शहर की बड़ी फर्म 'किंग रियैलिटी में नौकरी मिल जाती है। और बनारस वाली लड़की पूरे तौर पर अमेरिकन शैली को अंगीकर कर लेती है। इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और वह शिवेश से ज्यादा स्वयं पर भरोसा करने लगती है। संबंधों में सहजता धीरे – धीरे तिरोहित होने लगती है। वह अपने असमर्थ पति के प्रति विमुख हो जाती है। उसकी मित्र क्रिस्टीन जब उससे मिलने आती है तो वाना उससे अपने मानसिकता स्पष्ट करते हुए कहती है कि – ''यह बहुत बड़ी बेईमानी, बहुत बड़ा विश्वाशघात है, पर शिवेश को पहले दिन से ही पति रू॰ में ग्रहण करना मेरे लिए यातना रही है।''[7] और वह इस यातना को झेलती हुई परिवार का भार ढोती हुए आगे बढ़ती है। उसे कई समस्याओं का सामनाा करना पढ़ता और वह अपने परिश्रम और दृढ़ निश्चय से सफलता प्राप्त करती है। लेकिन जीवन के कड़वे अनुभव भी उसे कम नही मिलते। अपने परिवार के प्रति प्रेम का प्रतिदान भी उसे परिवार के सदस्यों की ओर से अच्छा नही मिलता। एक ओर पति कोकीन के धन्धे में फॅसकर परिवार को बेसहारा छोड़कर पलायन करता है और पुलिस से बचता फिरता है तो दूसरी ओर विदेशी माहौल में पले बड़े बच्चे भी मॉ के डॉटने और गुस्से में हाथ उठाने पर उसे पुलिस में देने की बात करते है।

अन्ततः वाना स्वार्थी गैर जिम्मेदारी शिवेश को छोड़ने का निर्णय लेती है। वाना प्रारम्भ से ही राहुल के प्रति आकर्षित है, किंतु कभी भी उसने अपने भीतरी इच्छा सबके सामने प्रकट नहीं होने दी है वह नये जीवन – साथी के रूप में राहुल को स्वीकार करती है और उसके द्वारा गर्भवती भी हो जाती है। शिवेश अचानक से राहुल और वाना के सामने उपस्थित हो जाता है, जिससे वाना स्तब्ध रह जाती है, शिवेश वाना के पेट में पल रहे बच्चे को (अपना बच्चा समझकर) खुश हो जाता है, लेकिन वह राहुल की वहॉ मौजदूगी से हैरान हो जाता है। वह वाना से प्रश्न करता है, परन्तु वाना स्तब्ध रह जाती है। तब वह वाना से कहता है '' सब कुछ किया, जो कुछ भी किया तुम्हारी खुशी के लिए, लेकिन वाना स्पष्टतः कहती है – मैं तुम्हे छोड़ रही हूॅ, शिवेश वह उसे यह बताती है कि यह गर्भस्थ शिशु उसका नही, बल्कि राहुल का है। अपनी उपेक्षा, अपमान, निराशा, शून्यता की स्थिति में शिवेश अपनेको संभाल नही

पाता और रात में गैरेज में जाकर आत्महत्या कर लेता है''।[8] राहुल दो बच्चों समेत वाना को स्वीकार कर लेता है। उपन्यास में वाना के साथ साथ एक दुनिया और भी है जिसमें अंजी है, राहुल, सुबोध है सब एक दूसरे की तरह सफलता की सीढ़िया नही चढ़ पाते और नही शिवेश की तरह टकराकर लहूलुहान होते हुए कारूणिक अन्त को प्राप्त होते है – सवाल है अपनी – अपनी क्षमता और अपनी – अपनी नियति का।

रूकेगी नहीं राधिका' एक ऐसी कहानी है। जो खुद में उलझ गई है राधिका ने अपने घर भारत में जो एकाकीपन झेला है, अमरीका पहुॅचकर उसकी भयावहता और बढ़ जाती है। विदेश प्रवास का अनुभव उसके लिए कुछ ऐसा है – '' जैसा वह एक लंबी अंधकारमय, सर्द सुरंग में यात्रा कर रही है जहां न लक्ष्य दीखता है, न उसका अंत।''[9] राधिका अमरीका इसलिए गई थी क्योकि क्षणांश में उसके ऊपर से एक तूफान गुजर गया था। अपने विधुर पिता को विद्या के साथ पुनर्विवाह करते देखकर एकदम विचलित हो उठी थी और अपने से उम्र में काफी बड़े डैन के साथ अमरीका चली गई। पर वहां डैन के साथ उसका ताल – मेल नही बैठा और उसे यह भी लगा कि शायद विदेश आकर उसने पापा के साथ अन्याय किया है। इसलिए अपनी शिक्षा पूरी करके वह भारत लौटने का मन बना लेती है।

राधिका भारत वापस लौटकर भी अपनी धरती से पहले की भांति जुड़ नही पाती। जिस व्यग्रता से वह लौटी थी, बहुत जल्द ही उसका मोहभंग हो जाता है। अपने विखरते व्यक्तित्व को संभालने के लिए व ह पहले अक्षय और फिर मनीष की तरफ बढ़ती अवश्य है, पर कदम थके हुए ह रहते है। तभी विद्या की आकस्मिक मौत उसे पापा से जुड़ने का एक और मौका देती है, लेकिन वह उसे स्वीकार नहीं करती है और मनीष के पास जाने का मन बना लेती है। राधिका के जिस द्वंद्व का लेखिका न बड़ी सूक्ष्मता, तन्मयता और मार्मिकता से अंकन किया है। वह पाठकों को भी अभिभूत किए बिना नही रहता। राधिका का निर्णय भी पाठक को गहरा स्वस्ति बोध कराता है। किन्तु इस प्रवासी जीवन की एक और त्रासदी यह है कि विदेश से असन्तुष्ट होकर यद्यपि वह व्यक्ति भारत लौटता भी है तथापि देशी माहौल में वह स्वयं को संभाल नहीं पाता है। और ऐसी स्थिति में वह न विदेश का हो पाता है और न ही भारत का ही रह पाता है। उसे रिवर्स कल्चरल शॉक झेलना पड़ता है। राधिका भी जब विदेश जाती है तब उसके अकेलेपन की भयावहता और सघन हो उठती है। नये बने सम्बन्धों की रसमयता के बावजूद उसका अजनबीपन बढ़ता जाता है। वह अपने घर – परिवार वह पापा के पास लौटना चाहती है। लेकिन अंशतः उसका व्यक्तित्व विभाजित हो चुका है। अब वह मनीष के समान रिवर्स कल्चरल शॉक झेलती है।

'अंतर्वशी' में उषा जी ने यह भी स्पष्ट किया है कि विदेशी माहौल में बच्चे किस प्रकार अपनी मॉ को तिरस्कृत करने लगे है। विदेशी माहौल में पले बढ़े होने के कारण इन बच्चों के लिए किसी भी रिश्ते की कोई अहमियत नही है। भारत में भी आज कौन बच्चा मॉ – बाप की सुनता है किन्तु यहां अभीतक स्थितियां इतनी दारूण नहीं हुई है।

उषा जी ने 'शेष यात्रा' और अंतर्वशी' इन दोनों उपन्यासों में लड़कियों के उन मॉ बापों की कटु आलोचना भी की है जो बेटियों को उचित और पूरी शिक्षा न देकर सस्ता और धनी वर पाने के लालच में विदेश मेंरहने वाली किसी अज्ञात भारतीय से शादी कर देने में अपनी बड़ी उपलब्धि मानते है। आज दूल्हे का विदेश होना एक बड़ी 'क्वालिफिकेशन' माना जाने लगा है। कोढ़ यह देखने की कोशिश नहीं करता कि वर जी का चरित्र कैसा है और दरअसल में वह क्या करता है। 'शेषयात्रा' की अनु बी0 एस0 सी0 फाइनल में है और जल्दबाजी में बिना ग्रेजुएट हुए उसकी शादी प्रणव के साथ कर दी जाती है और उसे डॉ0 प्रणव कुमार के साथ विलायत भेज दिया जाता है। जहां उसको प्रवासी जीवन का संघर्ष झेलना पड़ता है।

इस प्रकार उषा प्रियंवदा ने प्रवासी जीवन के इन पात्रो और परिवारो की जिन्दगी को, उनके आपसी सम्बन्धों और संघर्षों को गहरी अर्न्तदृष्टि और पर्यवेक्षण – सामर्थ्य के साथ अपने उपन्यासों में उद्घटित किया है। अनुभव की प्रमाणिकता और गहन संवेदनीयता से युक्त उनकी रचनाएं प्रवासी जीवन को उघाड़ कर रखने में पूर्णतः सक्षम है। जीवानुभव की प्रमाणिकता को कथा में उतारते हुए वर्जित सत्यों को भी जिस साहस, सहजता के साथ प्रस्तुत किया है उसका सबूत, शेषयात्रा, 'अंतर्वशी' और 'रूकोगी नही राधिका' में है वे बिना किसी दावपेंच के कहानी को बड़ी सलोनी सच्चाई के साथ सामने रख देती है। उनमें बनता जैसा कुछ नहीं है। विवकपूर्ण व्यवहार के साथ गहरी करूणा से माानवीय नियति को वे रेखांकित करती है।

संदर्भ सूची

1. उषा प्रियंवदा का कथा साहित्य – डां साधना शर्मा, पृ0 –9।
2. समकालीन उपन्यास : रचना और परिवेश – नयना पृ0 – 214।
3. पंचशील शोध समीक्षा – संपादक, हेतु भारद्वाज – पृ0 –54।
4. उषा प्रियंवदा का कथा साहित्य – डां साधना शर्मा, पृ0 – 170।
5. हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदनाऐ – डां0 उषा यादव, पृ0 – 79।
6. उषा प्रियंवदा का कथा साहित्य – डां साधना शर्मा पृ0 –28।
7. समकालीन उपन्यास में रचना और परिवेश – नयना, पृ0 – 214।
8. उषा प्रियंवदा का कथा साहित्य – डां0 साधना शर्मा पृ0 – 33।
9. हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदनाऐ – डॉ0 उषा यादव पृ0 –78।
10. नयना – समकालीन उपयास रचना और परिवेश, प्रकाशन संस्थान 4268 – बी./3 अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली – 110002 प्रथम संस्करण, 2012।
11. यादव डॉ0 उषा – हिंदी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदनाऐ, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड अंसारी मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1999।
12. शर्मा डॉ0 साधना – उषा प्रियंवदा का कथा साहित्य विशाल प्रकाशन जी0 – 30/बी गली नं0 4 गंगा विहार दिल्ली – 110094 संस्करण 2014।
13. भारद्वाज डां0 हेतु संपादक – पंचशील शोध समीक्षा (त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका) वर्ष 5 अंक – 19, जनवरी – मार्च 2013।